लिख दो, तो भी काफी है। बाकी जिम्मेदारी मेरी। मुझे उसका अभ्यास है।'' नामजोशी ने आग्रह किया।

इस तरह से काफी बहस हुई। इससे निपटते-निपटते अँधेरा होने लगा था। भोजनोत्तर आराम तलब करने का मौका न मिलने के कारण नन्दर्गीकर शास्त्री की जान निकली जा रही थी।

इसी बीच बलवन्तराव ने कहा, ''हमने छापाखाना खरीदने का निर्णय तो ले ही लिया है। मेरा विचार है कि लगे हाथ क्यों न हम उसे देख भी लें?''

''लेकिन उसकी इतनी जल्दी भी क्या है? कल आराम से देख लेंगे। छापाखाना कहीं भाग थोड़े ही रहा है?'' शास्त्री जी ने उन्हें रोकते हुए कहा।

लेकिन बलवन्तराव अपनी ही जिद पर अड़े रहे। वे, नामजोशी, आगरकर आदि लोग मांडे के घर गये। उन्हें इस बात पर दु:ख हुआ कि उनके पास रखा हुआ छापाखाने का सामान अब चला जाएगा। वे खुद ही मामूली-सा दाम चुकाकर उसे खरीदना चाहते थे। मांडे से इन लोगों की वार्ता हुई। इन लोगों को सन्देह था कि मांडे छापाखाने के सामान में जरूर रोड़े अटकाएँगे।

इस पर बलवन्तराव ने कहा, ''इसमें सोचने की क्या बात है? छापाखाना हमने खरीद लिया है और हम उसके मालिक हैं। हम इसे तुरन्त यहाँ से ले चलेंगे। देखते हैं, कौन माई का लाल हमें रोकता है।''

बलवन्तराव का अन्दाजे-बयाँ ही कुछ ऐसा था कि उन्हें रोकने की किसी को हिम्मत नहीं हुई।

नामजोशी ने कहा, ''लेकिन सामान उठाने के लिए रात के समय अब मजदूर कहाँ मिलेंगे?''

बलवन्तराव ने हँसकर कहा, ''मजदूर कहाँ से मिलेंगे? हम इतने सारे लोग तो यहाँ हैं।'' उन्होंने आव देखा न ताव, एक टाइप केस उठायी और कन्धे पर लिये चल पड़े।

नामजोशी और आगरकर देखते ही रह गये। फिर तो नामजोशी ने भी दूसरी केस उठा ली। उसके बाद तो बाकी लोग भी कमर कसकर तैयार हो गये और बाकी बचा सामान वे समेटने लगे।

इस प्रकार, बलवन्तराव और उनके सहयोगियों के काँधे पर सवार होकर 'केसरी' का छापाखाना नये भवन में चला गया।

ग्राण्ट रोड, बम्बई का थियेटर दर्शकों से खचाखच भरा था, उस दिन अण्णा साहब किर्लोस्कर की नाटक-मण्डली संगीत-नाटक 'शाकुन्तल' का प्रयोग कर रही थी। न्यू

स्कूल की तारीख को ही इस नाटक-मण्डली की स्थापना हुई थी।

पहला घण्टा हुआ। दर्शक अपना-अपना स्थान ग्रहण करने लगे। इसी बीच दो सुशिक्षित और प्रतिष्ठित-से ब्राह्मण-पुत्र थियेटर में आये और पर्चे बाँटने लगे। दर्शक हैरत से उन दोनों युवकों की ओर देख रहे थे। वे असमंजस में पड़ गये कि खाते-पीते घर के इन युवकों पर यह ओछा काम करने की नौबत क्यों आयी। सब लोगों ने बड़ी उत्सुकता से पर्चे पढ़े। पुणे से दो नये अखबार शुरू होने जा रहे थे। उन्हीं का विज्ञापन था वह।

दर्शकों में बापूसाहब आठल्ये भी थे। उन्होंने बलवन्तराव को पहचान लिया, और आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा, ''क्यों बलवन्तराव, यह क्या नया काम शुरू किया है तुमने?''

बलवन्तराव ने कहा, ''हमारे पर्चे पढ़िए, अपने आप मालूम पड़ जाएगा।''

बलवन्तराव के पर्चे को बापूसाहब ने एक नजर देखा, ''यानी कि तुम लोग नये अखबार शुरू करोगे? तुम लोग तो एक के बाद एक नये-नये काम करने में ही लगे हुए हो। पहले स्कूल खोला, अब ये अखबार...''

बलवन्तराव ने मुसकराकर कहा, ''हमारे इस अभियान में आप लोगों को भी शामिल होना चाहिए। चलिए, नेक काम में देरी मत कीजिए। आप लोग हमारे अखबारों के ग्राहक बनिए, रसीद-बुक मैं साथ लेकर ही आया हूँ।''

बापूसाहब हँस दिये, ''तुम तो बड़े ही चण्ट निकले यार! मैं तो बखुशी तुम्हारे दोनों अखबारों का चन्दा दे देता हूँ। अरे भाई, तुम जैसे कार्यकर्ता अब हैं ही कहाँ?''

उन्होंने पैसे दिये तो बलवन्तराव ने अपनी जेब से रसीद-बुक निकालकर उन्हें चन्दे की रसीद और टूटे पैसे लौटाते हुए कहा, ''यह रही चन्दे की रसीद और बाकी पैसे। आप जैसे लोगों को असुविधा न होने देने के लिए रेजगारी भी मैंने साथ में रख रखी है।''

बापूसाहब को तुरन्त चन्दा देते देखकर और भी कई लोगों ने चन्दा जमा करने की इच्छा प्रदर्शित की।

इस पर बलवन्तराव ने हँसकर कहा, ''देखिए जनाब, यदि आप सम्पादक के हाथ से ही रसीद लेना चाहते हैं तो दोनों अखबारों का चन्दा आप लोगों को जमा करना पड़ेगा।''

तीसरा घण्टा बजते ही नामजोशी और बलवन्तराव बाहर जाने लगे, तो उन्हें बाहर जाते देखकर बापूसाहब ने कहा, ''क्यों तिलक, तुम नाटक नहीं देखोगे? नाटक तो दिल को पकड़ लेनेवाला है!''

बलवन्तराव ने गर्दन हिलाकर कहा, ''आज नहीं। फिर कभी देख लेंगे।''

लेकिन बलवन्तराव उस नाटक के लिए बाद में भी कभी समय नहीं निकाल